International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN: **3049-2017**
IJMH 2026; 3(3): 09-10
© 2026 IJMH
www.themultijournal.com
Received: 18-04-2026
Accepted: 30-04-2026
Publish : 01-05-2026

प्रोफे.डा.शुचिता ला.दलाल
विभागाध्यक्षा,
स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग,
राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपूर,
विद्यापीठ, नागपूर

Correspondence:
प्रोफे.डा.शुचिता ला.दलाल
विभागाध्यक्षा,
स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग,
राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपूर,
विद्यापीठ, नागपूर

कालिदास के काव्यों में वृक्ष वनस्पतीयों का उल्लेख

प्रोफे.डा.शुचिता ला.दलाल

सारांश: कालिदास निसर्गप्रेमी है,यह कालिदास रचित सभी काव्यों में वृक्ष तथा वनस्पतीयों के उल्लेख से स्पष्ट होता है । कदम्ववृक्ष, सालवृक्ष, अर्जुनवृक्ष तथा केतकीवृक्ष इन सभी वृक्षों का वर्णन प्राप्त होता है। आभूषण भी वृक्षों के द्वारा प्राप्त होते है,यह कल्पना भी कालिदास ने की है । कालिदास की प्रगल्भता अवर्णनीय है। तथापि प्रस्तुत शोध निबंध में केवल वृक्ष -वनस्पतीयों का उल्लेख किया है ।

संकेताक्षर: वृक्ष –वनस्पती, कालिदास, ऋतू, निसर्गसृष्टि,काव्य, कल्पवृक्ष

कालिदास रचित सभी काव्यों में वृक्ष तथा वनस्पतीयों का उल्लेख आता है । कालिदास स्वयं सृष्टि पर नितान्त स्नेह करते है । अतः सृष्टि के प्रत्येक पदार्थ कालिदास को 'शिव' के रूप में दिखते है । इस अष्टरूपी देवता 'शिव' में जल तथा पृथ्वी का उल्लेख कालिदासने 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के प्रथम अध्याय में प्रथम श्लोक में ही है।[1]

ऋतुसंहार की वर्षा ऋतु में संपूर्ण पृथ्वी जल से युक्त होती है । इसी ऋतु में नये - नये वृक्ष तथा वनस्पतीओं की उत्पत्ती भी होती है। फल-फुल, धन-धान्य के लिए यह एक महत्त्वपूर्ण ऋतु है। जलकर्णों से मिश्रित मेघ के सम्पर्क में शीतलपवन सभी को उत्कण्ठित करता है।

कदम्बसर्जार्जुनकेतकीवनं विकम्पयैस्तत्कुसुमाधिवासितः
ससीकराम्भोधरसग्ङषीतलः समीरणः कं न करोति सोत्सुकम्।।[2]

कदम्ववृक्ष, सालवृक्ष, अर्जुनवृक्ष तथा केतकीवृक्ष इन सभी वृक्षों के वन को कंपाती है। तथा इन सभी वृक्षों के फूलों को भी सुगन्धित करती है। अतः तर्कसंग्रहकार पृथ्वी को 'गन्धवती' कहते है।[3] **"गन्धवस्तीपृथिवीं।"**

कदम्ववृक्ष में नये फुलों में नूतन परागों का वर्णन इसमें पाया जाता है। केतकी के फूलों की मालाओं[4] का वर्णन भी कालिदास ने किया है।

हरीभरी रहनेवाली वनस्पतीयाँ वर्षा ऋतू में ही आकर्षित करती है। गन्धवती पृथिवी का गन्ध, इन्ही वृक्ष नया वनस्पतीयाँ, उनके पुष्प सुगन्धित करते है। निसर्ग के प्रती कालिदास का प्रेम शायद वर्षा ऋतु में है। अतः 'मेघदूत' जैसे खण्डकाव्य की रचना कालिदास से ही हुई है। मेघ और स्त्रियाँ दोनों ही प्रवासियों के मन को आकर्षित करती है।

'स्त्रियाश्च काञ्चीमणिकुण्डलोज्ज्वला हरन्ति चेतो युगपत्प्रवासिनाम्'[5]

वनप्रदेश के पेड ग्रीष्म के कारण तापित होते है। यही पेड वर्षा ऋतु के नवीन जल से मानो ताप नष्ट होते हुएँ उनकी डालियाँ नाचती हैं। कदम्बपुष्प जल से 'मुदित' प्रसन्न होते है। कालिदास ने 'कदम्ब' का वर्णन 'ऋतुसंहार' में किया है।

'मुदित इव कदम्बैजतिपुष्पैः समन्तात्
पवनचलितशाखैः शाखिभिर्नृत्यतीव।
हसितमिव विधत्ते सूचिभिः केतकीनां
नवसलिलनिषेकच्छिन्नतापो वनान्तः।।[6] **2.24 - ऋतुसंहार**

मालती वृक्ष का वर्णन भी कालिदास प्रस्तुत करता है।

स्त्रियों के आभूषण तथा कालिदास की सौंदर्यता:

कालिदास शिव का उपासक था ही तथा निसर्गसृष्टि का रचयिता भी था। समस्त जगत में जीवधारीत जीवन की अवस्था समझने वा जानने में कालिदास की कमतरता नही दिखती।

जीवन का एक अमूल्य अङ्ग यौवनावस्था थी। अतः पृथ्वी, जल, वायु, आकाश के रूप में विभिन्न दृष्टि कालिदास में थी। इसीकारण वनप्रदेश उत्पन्न वृक्ष तथा वृक्ष के बीज से लेकर उनकी शाखाएँ तथा डालियाँ, फूल, पराग आदि सभी पर कालिदासने अत्यंत सुंदरता अपने शब्दों में प्रस्तुत कि है।

यह वृक्षों पर लता मानो रमणीयों के समान अपने प्रेमिओं को आलम्बित करती थी। कालिदास की कामिनीओं के आभूषण वृक्ष से बनाने की सौंदर्यता दिखती है।

अभिज्ञानशाकुन्तल में चौथे अङ्क में शकुन्तला को सभी आभूषण वृक्षों के द्वारा प्राप्त होते है। कालिदास का यह उल्लेख इस प्रकार है।-

क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डुतरूणा माङ्गल्यमाविष्कृतं
निष्ठयुतश्चरणोपभोगसुलभो लाक्षारसः केनचित्।
अन्येभ्यों वनदेवताकरतलैरापर्वभागोत्थितैर् -
दत्तान्याभरणानि तात्किसलयोद्भेदप्रतिद्वन्दिभिः।।[7]

शाकुन्तल के चौथे अङ्क में वन, वृक्ष, लता, वनस्पती का भी उल्लेख है। शृंगार में रमणिय स्त्रियों के आभूषण फल, फूल आदि में उपयुक्त होते है। उत्तरमेघ में अलकानगरी के कल्पवृक्ष से विविध उपयुक्त पदार्थ अलंकार किये जाते थे । कालिदास का यह श्लोक [8] में दर्शनीय है -

वासश्चित्रं मधु नयनयोर्विभ्रमादेशदक्षं
पुष्पोद्भेदं सह किसलयैर्भूषणानां विकल्पान्।
लाक्षारागं चरणकमलन्यासयोग्यंच यस्याम्
एकं सूते सकलभवलामण्डनं कल्पवृक्षः ।। [9]

मेघदूत, उत्तरमेघ 12

कल्पवृक्ष से ही विविध रंग के वस्त्र, कोमल फूल तथा पत्तियाँ का वर्णन प्राप्त होता है। तथा 'महावर' का भी उल्लेख आता है।

यक्षिणी ने इस कल्पवृक्ष को पुत्र के समान बचपन से ही पालन करते का उल्लेख कालिदास ने किया है। वैदुर्य मणि कमलों के डंठल को युक्त होता है। ९

कालिदास की प्रगल्भता अवर्णनीय है। केवल कामिनीयाँ नही अपि तु वृक्ष भी स्त्रियों से रस करना चाहते है -

'यक्षिणी कें बाएँ पैरों से ठोकर खाने के लिए अशोकवृक्ष बेचैन है। यह अशोकवृक्ष लाल रंग का है तथा वह माधवी मंडप के पास है '। यह बात यक्ष मेघ को बतलता है। मौलसिरी वृक्ष का उल्लेख भी यक्ष करता है।

रक्ताशोकश्चलकिसलयः केसरश्चात्र कान्तः
प्रत्यासन्नो कुरबकवृतेर्माधवीचीमण्डपस्य।
एकः सख्यास्तव सह मया वामा पादाभिलाषि
काइक्षत्यन्यो वदनमदिरां दोहदच्छद्यननाऽस्याः।।[10]

इस श्लोक में मौलसिरी पेड भी यक्षिणी की मुँह सें निकली मदिरा के छीटे पीने की इच्छा करता है। कदम्बफूल से स्त्रियाँ अपने माँग भरती है। कून्द के फूल चौटीयों पर गुंथाई जाती थी। इसका उल्लेख कालिदास के मेघदूत से आता है। कमलवृक्ष से हाथ के आभूषण बनाएँ जाते थे। सिरस के फूल कानोंपर लगाया जाता था। गौंर रंग पाने के लिए लोध्र नामक फूल का पराग हात से दबाकर प्राप्त करती थी।

यह श्लोक वर्णनीय है-

हस्ते लीलाकमलमलके बालकुन्दनुविद्धं
नीता लोध्रप्रसवरजसा पाण्डुतामानने श्रीः।
चुडापाशे नवकुरबकं चारू कर्णे शिरीषं
सीमन्ते चं त्वदुपगमजं यत्र नीपं वधूनाम्।।[11]

इस प्रकार कवि कुलगुरु कालिदास ने निसर्गसृष्टि की पृथ्वी के विविध पदार्थो को अत्यंत कौशल्य से अपनी रचनाओं में समाविष्ट किया है। कालिदास के काव्यों में नदी, पर्वत, वन, पशु, पक्षी सभी का उल्लेख आता है। प्रस्तुत शोध निबंध में केवल वृक्ष - वनस्पतीयों का उल्लेख किया है। कालिदास की 'शैली वैदर्भी होने के कारण स्त्रियों के आभूषणों में मधुरता आती है। कालिदास के काव्यों में इस प्रकार वृक्ष, फल, फूलों का उल्लेख का प्राप्त होता है।

संदर्भसूची -

1. या सृष्टि स्त्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री
ये द्वे कालं विधत: श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम्।
यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः
प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवत् वस्ताभिराष्टाभिरीशः।। (प्रथम अंक ,अ-भिज्ञानशाकुन्तलम्)
2. 2.17, ऋतुसंहार - चौखम्बा, सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी.
3. अन्तभट्टविरचित तर्कसंग्रह, , चौखम्बा, सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी.
4. मालाः कदम्बनवकेसरकेतकीभियोजितः शिरसि बिभ्रति योषितोऽद्य।कर्णान्तिरेषु कुभद्रुममञ्जरीभिरिच्छानुकूलरचितानवतंसकांश्च।।2.21 कालिदासकृत ऋतुसंहार, चौखम्बा, सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी.
5. 2.20 - ऋतुसंहार, पृ.327-कालिदास ग्रन्थावली, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, देहली
6. शिरसि बकुलमाला मालतिभिः समेताम्... 2.25 ऋतुसंहार
7. कालिदासविरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् - अंक 4, श्लो. 5, चौखम्बा, सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी.
8. कालिदासकृतं मेघदूतम् - 12 श्लो. उत्तरमेघ, चौखम्बा प्रकाशन दिल्ली.
9. कालिदासकृतं मेघदूतम् - 16 श्लो. उत्तरमेघ, चौखम्बा प्रकाशन दिल्ली.
10. कालिदासकृतं मेघदूतम् - 18 श्लो. उत्तरमेघ, चौखम्बा प्रकाशन दिल्ली.
11. कालिदासकृतं मेघदूतम् - 2 श्लो. उत्तरमेघ, चौखम्बा प्रकाशन दिल्ली.